इक्कीसवीं सदी में मलयालम सिनेमा

मैमूना पी.

शोध छात्रा, हिंदी विभाग,
कोच्चिन विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्ची, केरल– 682022

मलयालम फिल्म की यात्रा शुरू हुए करीब 80 साल हो चुके हैं। इस बीच मोलीवुड नाम से जानी जाने वाली इस फिल्म इंडस्ट्री ने कई बेहतरीन फिल्मों को सम्मानित किया है। इन फिल्मों ने भारतीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय दर्शकों को भी आकर्षित किया है। यहाँ की संस्कृति की ही तरह यहाँ की फ़िल्में भी बड़ी सीधी-सादी हैं जिसमें भड़कीलापन नहीं होता। अपनी सादगी में भी ये फ़िल्में बड़ी संदेशात्मक होती हैं जो हर दर्शक के अंतर्मन को छू जाए ।

21 वीं सदी में मलयालम में दो ऐसी फिल्मों का निर्माण हुआ जो ऑस्कर के लिए नामांकित हुई। इसमें पहली फिल्म है 1997 में बनी 'गुरु' जिसके निर्देशक है राजीव अंचल और दूसरी फिल्म है 2011 में सलीम अहमद के निर्देशन में बनी 'आदमिन्डे मकन अबु' (आदम का बेटा अबु)। दोनों ही फ़िल्में अपने आप में खूबसूरत और संदेशात्मक हैं।

'गुरु' फिल्म का विषय कुछ प्लेटो की गुफा की रूपक कथा से साम्य रखता है। इस फिल्म में रूपकों का इस्तेमाल बहुत हुआ है जो कई अर्थो को प्रतिपादित करते हैं। समाज में जितने भी कट्टरपंथी हैं उन पर इशारा किया गया है। विशेषकर धार्मिक कट्टरपंथी जो धर्म के बाहरी कवच को सच मानकर उसके मूल अर्थ को भूल गए हैं।

फिल्म की शुरुआत में एक उद्धरण दिखाया जाता है कि "गुरु वह है जो अपने ज्ञान से अज्ञान के अंधकार को मिटाकर ज्ञान की रोशनी प्रदान करता है"। आगे दिखाया जाता है कि "यह फिल्म मानव अंतर्मन के लिए एक आईना है जिससे आगे आने वाले भीषण नरसंहारों को मिटाया जा सके। इसमें दिखाए गए दंगे काल्पनिक मात्र हैं"।

रघुरामन केरल के एक गाँव के मंदिर के पुजारी का बेटा है। इस गाँव का वातावरण बड़ा ही सुखद है। यहाँ हर धर्म के बीच आपसी भाईचारा है। धर्म के मूल अर्थ को न समझकर उसकी बाहरी खोल को ही पूरा सच मानकर जीने वाले यहाँ भी हैं। यही लोग यहाँ समस्या का बीज बोते हैं। एक दिन एक हिन्दू बच्चा

अपने मुसलमान दोस्त की टोपी पहन कर मंदिर में प्रवेश करता है और मंदिर के पुजारी उसे मुसलमान मानकर मंदिर के अपवित्र होने की बात पंचायत में करते हैं। पर मामले को तब हवा मिलती है जब एक नेता अपनी पार्टी को भारी वोट दिलाने के लिए वहाँ दंगा फसाद खड़ा कर देता है। रघुरामन के अपने भी इस दंगे में मारे जाते हैं। वह एक उग्रवादी दल में जा मिलता है। बदला लेने के लिए वह मुसलमानों के शरणार्थी कैम्प में बम फोड़ने की तैयारी करता है। इस बीच वह एक आश्रम में पहुँचता है जो किसी गुरु का आश्रम है। यहाँ हर धर्म के लोगों को शरण दी गई है। वहाँ उसकी मुलाक़ात वैदेही से होती है। वैदेही उसे गलत रास्ते से हटाना चाहती है और उसे कुछ समय गुरु के चरणों में ध्यान करने के लिए विवश करती है। इस ध्यान में लीन होकर उसका मन दूसरी दुनिया में पहुँच जाता है।

इस नई दुनिया में हर कोई अँधा है। वहाँ रोशनी वाली दुनिया को मिथ्या माना जाता है। इस बारे में बात करने वाले को यहाँ धर्मद्रोही माना जाता है। यहाँ ऊँच-नीच का भेदभाव भी है। रघुरामन यहाँ रमणन नामक युवक से मिलता है जिसकी जान भी वह राजा के सिपाहियों से बचाता है। यहाँ का राजा है विजयन्ता।

अध्यापक बच्चों को पढाता है कि इस अंधेरे के परे कोई दुनिया है ही नहीं। बच्चों को जन्मते ही एक विशेष प्रकार के फल का रस दिया जाता है। इस फल का नाम है 'इलामा'। उनका मानना है कि इसका बीज विष है। रघुरामन जब इस मादक फल को खाता है तो वह अँधा हो जाता है। तब राजा के सैनिक उसे पकड़ कर ले जाते हैं और उसे 'इलामा' के बीज का सेवन करा कर मृत्यु दण्ड दिया जाता है। ऐसा मृत्यु दण्ड यहाँ पहली बार दिया जाता है। पर असल में 'इलामा' के बीज को खाने से उसकी आँखों की रोशनी लौट आती है। वह यह नया ज्ञान सबको बताकर उनके अंधेपन को मिटाता है। वह समझ गया कि जनता को इस सच से दूर रखा गया है। सच में 'इलामा' फल अगर धर्म है तो उसका बीज ही वह सत्य है अर्थात ईश्वर है। फिल्म के अंत में रघुरामन अपनी असली दुनिया में लौट आता है और बदले की भावना को मिटाता है तथा मुस्लिम शरणार्थियों की रक्षा के लिए जाता है।

इसकी कहानी एच.जी.वेल्स के "The Country of the Blind" से प्रेरित है। फिल्म का सन्देश है कि धर्म लड़ने के लिए नहीं, मानवीयता की स्थापना के लिए है। मानवीयता की भावना समाज के सभी रिवाजों, सभी नियमों से बड़ी है यहाँ तक कि धर्म से भी बड़ी। इसका सही अर्थ में बोध होना ही मानव को मानव के करीब लाएगा। धर्म का बाहरी खोल 'इलामा' फल की तरह मादक और उत्तेजक होता है जो अन्धकार ही देता है पर उसका बीज यानी वास्तविक सत्य ही ईश्वर है, ज्ञान है, रोशनी है।

ऐसे देश में जहाँ विज्ञान कथा और फांतसी से जुड़ी फिल्मों को तब तक स्वीकृति नहीं मिलती जब तक कि उसमें भारी तौर पर तमाशा नहीं दिखाया जाता, वहाँ 'गुरु' एक अच्छा सबूत है जिसमें विचारों का और दृश्यों का अच्छा संतुलन मिलता है। इस फिल्म का विषय हर काल में समकालीन है यह भी इसकी विशेषता है।

फिल्म के अंत में यह आशा की गई है कि रघुरामन जैसे लोग इस ज्ञान को अन्य लोगों तक पहुचाएंगे। अफवाहों और रास्ता भटकाने वाले whatsapp मेसेजस वाले इस युग में गुरु का ज्ञान ('इलामा' के बीज का सत्य) सभी को अपनाना होगा।

2011 में बनी सलीम अहमद की फिल्म आदमिन्डे मकन अबु (आदम का बेटा अबु) एक सीधी-सादी फिल्म है। यह वैश्वीकरण के युग में अकेले पड़ते वृद्ध जनों की कहानी है। साथ ही तीर्थ यात्रा के असली अर्थ को भी दर्शाती है। अबु और उसकी पत्नी ऐशु की बड़ी ख्वाहिश है हज पर जाने की। उनका बेटा सत्तार शादी के बाद सपरिवार दुबई में रहता है और अपने वृद्ध माता-पिता को भूल गया है। अबु इत्र, यूनानी दवा और धर्म से जुड़ी किताबों को बेचता है और उसका दोस्त जो छातों की मरम्मत करता है दोनों ही आज 'चीज़ों का इस्तेमाल कर फेंक' देने वाले इस युग में बेकार हैं। बेटे के होते हुए भी अबू और ऐशु को बुढ़ापे में जीने के लिए और अपनी ख्वाहिश को पूरा करने के लिए खुद ही कमाना पड़ता है। दोनों हज पर जाना चाहते हैं इसलिए वह इसके लिए प्रयत्न करते हैं। हज एक तीर्थ है। तीर्थ पर जाने से पहले अपने सभी बोझ को उतारना होता है तभी व्यक्ति वहाँ पूरे मन से ईश्वर में ध्यान लगा सकता है। अबु इन सभी नियमों का पालन करके ही हज पर जाना चाहता है। आज के युग में हज एक टूर पैकेज हो गया है पैसे वाले जब मन चाहे वहाँ जाते हैं। जबकि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए एक हज ही काफी है। अपने सभी आर्थिक संकटों को पार कर अबु हज की तैयारी करता है अपने पुराने पड़ोसी जिससे उसका झगड़ा हो गया था उससे अपना मनमुटाव मिटाता है और सारे कर्ज़े चुकाता है। इसके लिए वह दूध देने वाली गाय, सोना और घर के आँगन वाला कटहल का पेड़ भी बेच देता है। पर अंत में उसे जब पता चलता है कि पेड़ खराब था तो वह पैसे नहीं लेता और उसका हज पर जाना टल जाता है। उसे लगता है कि शायद ऊपरवाले को उसका पेड़ काटना अच्छा नहीं लगा क्योंकि पेड़ में जीवन है और यह सैकडों जीवन का केंद्र है। इसलिए उसने गलती की जिससे उसकी यात्रा टल गई। ईद उल ज़ुहा के दिन कटहल का नया पौधा लगाकर वह अगली बार हज पर जाने की आशा करता है। हालांकि उसके नेक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सभी उसकी सहायता करना चाहते हैं पर वह नहीं स्वीकारता क्योंकि यह नियम विरुद्ध है।

इस फिल्म के ज़रिए सलीम अहमद ने यही संदेश देना चाहा कि ज़रूरी नहीं कि हम हमेशा जो चाहे हमें मिल जाए पर प्रयत्न करने से हमारे लिए जो आवश्यक है वह मिल जाएगा।

हम आशा कर सकते हैं कि मलयालम आगे भी अपनी फिल्मों के द्वारा मानवीयता का संदेश देगी। हमारे देश का नाम ऊँचा करेगी। फिल्म नामक इस कला को उसके पूरे और सच्चे अर्थ में उभारेगी।

संदर्भ सूची:-

1. वीकिपीडिया
2. newindianexpress.com